कीट/रोगों के नियंत्रण हेतु संस्तुति रसायनों को उपयुक्त पानी में घोलकर छिड़काव किया जाय।

खरपतवारों को नियंत्रण करने के लिए फुट स्प्रेयर द्वारा सिंगल एक्सन नाजिल (फ्लेट फैन नाजिल) लगाकर संस्तुति किये गये खरपतवार नाशक रसायनों को उपयुक्त पानी में घोलकर छिड़काव किया जाये।

कृपया अधिक जानकारी हेतु किसान कॉल सेन्टर के निःशुल्क टॉल फ्री नं. 1800-180-1551 पर अथवा दूरभाष संख्या 0522-4155999 पर सम्पर्क करें।

विशेष जानकारी हेतु अपने क्षेत्र के कृषि विभाग के स्थानीय अधिकारी/कर्मचारी या विभाग की वेबसाइट www.agriculture.up.nic.in पर सम्पर्क करें।

प्रकाशक : प्रसार शिक्षा एवं प्रशिक्षण ब्यूरो, कृषि विभाग, 9, विश्वविद्यालय मार्ग, लखनऊ

किसान भाई इन्हें अपनायें

- अरहर की एक पंक्ति के बाद मक्का की एक पंक्ति बोकर मक्का की अतिरिक्त उपज पायें।
- अरहर की दो पंक्तियों के बीच मूँगफली की दो पंक्तियॉ बोई जाये और आमदनी बढ़ायें।
- मक्का की दो पंक्तियों के बीच मूँग/मूँगफली की दो पंक्तियॉ बोकर भूमि को उपजाऊ बनायें।
- अरहर की दो पंक्तियों के बीच में तिल की दो पंक्तियॉ बोकर अधिक लाभ उठायें।
- मूँगफली की तीन पंक्तियों के बाद बाजरे की एक पंक्ति बोकर कृषि को आर्थिक बनायें।
- अपने खेत की मिट्टी की जॉच कराकर सन्तुलित उर्वरकों का प्रयोग करें, जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति का ह्रास न हो।
- जैविक कृषि को अधिक से अधिक अपना कर रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग को घटायें तथा इसके प्रतिकूल प्रभाव से बचें।
- फौव्वारा (स्प्रिंकलर) सिंचाई पद्धति अपनायें और पानी को बचायें। भरपूर उत्पादन पायें।
- टपक (ड्रिप) सिंचाई पद्धति अपनायें एवं सिंचन क्षमता बढ़ायें।
- एकीकृत कीटनाशी प्रबंधन अपनायें एवं मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ायें।
- धरती माता कहें पुकार, जैव खाद है इसका ऋंगार।
- जैविक खाद अपनायें मिट्टी को बॉझ होने से बचायें।

स्ट्रिप कापिंग :

फसल सुरक्षा की दृष्टि से स्ट्रिप कापिंग का बहुत महत्व है। इस प्रकार की खेती से मुख्य फसल की सुरक्षा सुनिश्चित हो जाती है। किसान प्राचीन काल से मक्का, गन्ना, ज्वार आदि फसलों के चारों ओर आठ-दस पंक्तियों की पट्टी सनई, पटसन एवं ढैंचा बोते रहे हैं। इनकी पट्टी होने से जानवरों से फसलों की सुरक्षा सुनिश्चित हो जाती है।

जिंक सल्फेट/जिप्सम का महत्व :

धान-गेहूँ की फसली चक्र अपनाने से अधिकतम क्षेंत्र में जिंक की कमी भी परिलक्षित हो रही है। इसके लिये जिंक सल्फेट का प्रयोग करके फसलों में जिंक की कमी पूर्ण हो जाती है। जिससे फसलों के उत्पादन में वृद्धि हो जाती है।

इसी प्रकार जिप्सम का प्रयोग ऊसरीली भूमि को सुधारने के काम आता है। साथ ही तिलहनी फसलों में जिप्सम एक रामबाण दवा है, जिससे उत्पादन में बढ़ोत्तरी होती है, क्योंकि इसमें गंधक प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

पर्णीय छिड़काव :

आच्छादित फसलों में कीट/रोग से ग्रसित फसलों में छिड़काव हेतु संस्तुति रसायनों को उपयुक्त पानी में घोलकर लो वालूम फुट स्प्रेयर में डबुल एक्सन नाजिल द्वारा छिड़काव किया जाय। फल पौधों में हाइवालूम पावर स्प्रेयर द्वारा डबल एक्सन नाजिल द्वारा लगे